ॐ

अथ रुद्राक्षधारणविधि ।

तथा माहात्म्य भाषाटीकोपेत ॥

स्कन्द उवाच ।

भगवन्देवदेवेश देवदेव जगत्पते ।
पृच्छामि संशयं छिन्धि कथयस्व यथार्थतः ॥ १ ॥

हे भगवन् हे देव हे देवेश हे देवदेव हे जगत्पते जो मैं आपसे पूँछताहूँ उस संशयको दूर करके यथार्थ मेरे आगे आप कहो ॥ १ ॥

वामदक्षिणसिद्धान्ते कथितं यन्महागुणम् ॥
पुण्यानां च महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥ २ ॥

वाममार्गी और दक्षिणमार्गियोंके सिद्धान्तमें कहे हुए रुद्राक्षके जो महागुण हैं सो पुण्योंमे महत्पुण्यका देनेवाला, पवित्र, पापको दूर करनेवाला है (अपि च) बांये घाईं

अथवा दक्षिण वाईं रुद्राक्ष धारण करनेके सिद्धान्तमें कहेहुए जो महागुण हैं सो वह रुद्राक्ष पुण्यवान् मनुष्योंको महत्पुण्य-का देनेवाला और पवित्र, पापको दूर करनेवाला है ॥ २ ॥

रुद्राक्षधारणं श्रेष्ठमिह लोके परत्र च ।
कथं जातः कथं नाम कथं वै धार्यते नरैः ॥ ३ ॥

रुद्राक्ष धारण करना इस लोक और परलोकके विषे श्रेष्ठ है सो कैसे वो उत्पन्न होता हुआ क्या उसका नाम है और किस प्रकार मनुष्य उसको धारण करैं ॥ ३ ॥

कति वक्त्राणि किं मंत्रं कथयस्वाशु विस्तरम् ।

और कितने मुख हैं और कौनसे मंत्र हैं जिसकरके मनुष्य उसको धारण करैं सो शीघ्रही विस्तारसहित आप मेरेआगे कहो ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु षण्मुख तत्त्वेन कथयामि समासतः ।
त्रिपुरो नाम दैत्येन्द्रः पूर्वमासीत्सुदुर्जयः ॥ ४ ॥

महादेवजी बोले—हे स्कन्दजी तुम सुनो तुम्हारे आगे इस तत्त्वको कहताहूँ पहिले त्रिपुरनामक दैत्योंका राजा होता

हुआ और कोई उसके जीतनेको सामर्थ्य नहीं रखताथा जो उसको जीत सकै ॥ ४ ॥

जितास्तेन सुराः सर्वे ब्रह्मविष्णिवंद्रपन्नगाः ।
प्रार्थितोहं ततस्तैस्तु वधाय त्रिपुरस्य तु ॥ ५ ॥

उस त्रिपुर दैत्यने सँपूर्ण देवताओंको जीतलिया तब ब्रह्मा विष्णु इन्द्र पन्नग मिलकर मेरे पास आए और त्रिपुरदैत्यको मारने के अर्थ प्रार्थना की ॥ ५ ॥

तत्र सञ्चिंत्य वेगेन धनुस्तत्सहितं मया ।
त्रिपुरस्य वधार्थाय लोकानां रक्षणाय च ॥६॥

तब मैं अपने मनमें चिन्ता करने लगा वेगकरके धनुषवाणको हाथमें लेके त्रिपुरदैत्यको मारनेके अर्थ संसारकी रक्षा करने-के लिए ॥ ६ ॥

सर्वदेवमयं दिव्यमघोरास्त्रं भयापहम् ।
वज्रवच्चैव दुष्प्रेक्षे कालाग्निर्नाम नामतः ॥ ७ ॥

संपूर्ण देवतामय दिव्य अर्थात् सुन्दर भयको दूर करनेवाला बिजलीके समान जिसके देखनेको कोई सामर्थ्य नहीं रखता ऐसा कालाग्निनामक जो अघोर अस्त्र है ॥ ७ ॥

दिव्यैर्वर्षसहस्रैस्तु चक्षुरुन्मीलतं मया।
विह्वलव्याकुलादक्ष्णः पतिता जलबिन्दवः॥८॥

उसको देखकरके देवताओंके १००० हजार वर्षतक नेत्रोंको उन्मीलन करताहुवा तब विह्वलता और व्याकुलता-से जलकी काणिका नेत्रोंसे गिरती भई ॥ ८ ॥

तेनाश्रुबिंदुभिर्जाता मर्त्त्ये रुद्राक्षभूरुहाः॥
स्थावरत्वमनुप्राप्ता लोकानुग्रहकारकाः ॥ ९ ॥

उसी नेत्रके जलमें मनुष्यलोकमें रुद्राक्षके वृक्ष उत्पन्न हो स्थावरत्वको प्राप्त होतेहुए सँसारके हितके अर्थ ॥ ९ ॥

रुद्राक्षाणां फलं तस्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
लक्षं तत्स्पर्शने पुण्यं कोटिर्भवति चालनात् १०

उस रुद्राक्षके जो फलहैं सो तीनों लोकोंके विषे विश्रुत होरहेहैं उनके स्पर्श करनेसे लक्ष गुण फल प्राप्त होता है और उनकी माला बनाके पहरनेसे करोडगुण फल प्राप्त होता है ॥ १० ॥

दशकोटिसहस्राणि धारणात्फलमश्नुते।
लक्षकोटिसहस्राणि लक्षकोटिशतानि च ॥११॥

जपस्य लभ्यते पुण्यं नात्रकार्या विचारणा १२॥

दश करोड और दश हजार करोड पुण्यका फल और हजार करोड और लक्ष कोटि शत पुण्यका फल उसके जपकरनेसे मनुष्यको प्राप्त होताहै इसमें कुछ सँशय नहीं है१२॥

हस्ते कर्णे तथा शीर्षे कण्ठे रुद्राक्षधारणात्।
अवध्यः सर्वभूतानां रुद्रवच्चरते भुवि॥ १३॥

जा मनुष्य हाथमें कानमें शिरमें कंठमें रुद्राक्ष धारण करते हैं वो सर्व सांसारिक मनुष्योंको दुर्वाच्य और मारनेके योग्य नही है उनको इसप्रकार समझना चाहिये कि पृथ्वी-के ऊपर शिवजीमहाराज विचरते हैं॥ १३॥

सुरासुराणां सर्वेषां वन्दनीयो यथा शिवः
तथा भवति लोकेस्मिन्यो रुद्राक्षधरः सदा १४॥

जैसे समस्त देवता और राक्षसोंको शिवजी महाराज वंदनीय अर्थात् पूजा करने योग्य हैं तिसीप्रकार संसारके विषै रुद्राक्षको धारण करनेवाला मनुष्य सर्व सांसारिक मनुष्योंके वंदनीय अर्थात् पूजा करने योग्य है॥ १४॥

उच्छिष्टो वा विकर्मो वा युक्तो वा सर्वपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्पर्शनेन वै॥ १५॥

जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं अथवा बुरे कर्म करनेवाले अथवा अनेक प्रकारके पातकोंसे युक्त जो मनुष्य हैं वो रुद्राक्षके स्पर्श करतेही संपूर्ण पापोंसे छूट-जाते हैं ॥ १५ ॥

कण्ठे रुद्राक्षमादाय म्रियते यदि वा खरः ।
सोऽपिरुद्रत्वमाप्नोति किं पुनर्भुवि मानवाः१६

कंठमें रुद्राक्ष धारणकर जो खरभी मृत्युको प्राप्त हो जाय तो वहभी रुद्रस्वरूपको प्राप्त होताहै फिर पृथ्वीके विषै जो मनुष्य हैं उनकी क्या इससे सर्व सांसारिक मनुष्योंको अवश्यमेव रुद्राक्ष धारण करना उचित है ॥ १६ ॥

॥ कार्तिकेय उवाच ॥

एकवक्त्रं द्विवक्त्रञ्च त्रिचतुःपञ्चकं तथा ।
षट्सप्ताष्टनवास्यञ्च दशैकादशमेव च ॥ १७॥

स्कंदजी बोले कि–हे शिव एकमुखी द्विमुखी त्रिमुखी चतुर्मुखी पञ्चमुखी षण्मुखी सप्तमुखी अष्टमुखी नवमुखी दशमुखी एकादशमुखी ॥ १७ ॥

तथा द्वादशवक्त्राणि त्रयोदश चतुर्दश।
प्रत्येकमेषाञ्च गुणान्ब्रूहि मे भगवञ्छिव॥ १८॥

: तिसीप्रकार द्वादशमुखी त्रयोदशमुखी चतुर्दशमुखी रुद्राक्षोंके एक एकके प्रति जो महागुण हैं तिनको हे भगवन्! हे शिव! मैं आपसे पूँछता हूँ सो आप कहो॥ १८॥

॥ शिव उवाच ॥

शृणु षण्मुख तत्त्वेन वक्त्रेवक्त्रे तथा फलम्।
एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति १९॥

शिवजी बोले–षण्मुख! जौन २ मुखी रुद्राक्ष जिस २ फल को देनेवाला है उसको तुम सुनो मैं कहता हूँ एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिवस्वरूप है ब्रह्महत्याको दूर करनेवाला है१९॥

द्विवक्त्रो देवदेवेशो गोवधं नाशयेद्ध्रुवम्।

द्विमुखी रुद्राक्ष साक्षात् देवदेवेशका स्वरूप है गोवध करनेके पापोंसे छुडाने वाला है।

त्रिवक्त्रोऽग्निश्च विज्ञेयः स्त्रीहत्यां च व्यपोहति२०॥

त्रिमुखी रुद्राक्ष साक्षात् अग्निस्वरूप है स्त्रीहत्याको दूर करनेवाला है॥ २०॥

चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति ।

चतुर्मुखी रुद्राक्ष स्वयं ब्रह्मा है नरहत्याको दूर करने वाला है ॥

पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रःकालाग्निर्नाम नामतः॥२१॥

पञ्चमुखी रुद्राक्ष स्वयं कालाग्निनाम करके रुद्रस्वरूप है॥

अगम्यागमनं चैव तथा चाभक्ष्यभक्षणम् ।
मुच्यते नात्र सन्देहः पञ्चवक्त्रस्य धारणात्२२॥

अगम्य अर्थात् पर स्त्री तिसमें गमन करनेसे जो पाप तिसी प्रकार अभक्ष्य भक्षण करनेसे जो पाप लगता है वह पञ्चमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे नाशको प्राप्त होजाता है इसमें कुछ संशय नहीं है॥ २२ ॥

षड्वक्त्रः कार्त्तिकेयस्तु धारयेद्दक्षिणे भुजे ।
भ्रूणहत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः॥२३॥

षट्मुखी रुद्राक्ष स्वयं कार्तिकेय है उसको जो मनुष्य अपनी दक्षिण भुजामें धारण करते हैं वे भ्रूणहत्यासे आदि लेकर पापोंसे छूट जातेहैं इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ २३ ॥

सप्तवक्त्रो महासेन अनन्तो नाम नामतः ।
स्वर्णस्तेयं गोवधञ्च कृत्वा पापशतानि च॥२४॥

हे महासेन ! सप्तमुखी रुद्राक्ष अनन्त नाम करके विख्यात है जिन मनुष्योंने सोनेकी चोरी की है गोवध किये हैं अथवा अनेक प्रकारके सैकडों पाप किये हैं ॥ २४ ॥

मुच्यते नात्र सन्देहः सप्तवक्त्रस्य धारणात् ।

सप्तमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे मनुष्य उन पापोंसे छूट जाता है इसमें कुछ संदेह नहीं है ।

अष्टवक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो विनायकः॥२५॥

हे महासेन ! अष्टमुखी रुद्राक्ष साक्षात् गणेशजीका स्वरूप है ॥ २५ ॥

मानकूटादिजं पापं परस्त्रीजन्यमेव च ।
तत्पापं न भवेद्वत्स अष्टवक्त्रस्य धारणात्॥२६॥

हे वत्स ! मानकूटादिक और परस्त्री जन्य जो पाप हैं वो अष्टमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे उन मनुष्योंको नहीं लगते हैं ॥ २६ ॥

नवमं भैरवं नाम कापिलं मुक्तिदं स्मृतम् ॥
धारणाद्वामहस्ते तु मम तुल्यो भवेन्नरः ॥ २७ ॥

नवमुखी रुद्राक्षका भैरव नाम है कापिल वर्ण है जो मनुष्य अपनी वाम भुजामें धारण करते हैं वह मेरे तुल्य होजातेहैं२७॥

लक्षकोटिसहस्राणि पापानि प्रतिमुञ्चति ।

नवमुखी रुद्राक्ष लक्ष हजार करोड पापोंको नाश करने वाला है ॥

दशवक्त्रो महासेन साक्षाद्देवो जनार्दनः ॥ २८ ॥

हे महासेन ! दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् जनार्दन अर्थात् विष्णुका स्वरूप है ॥ २८ ॥

ग्रहाश्चैव पिशाचाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसाः ।
नागाश्च न दशन्तीह दशवक्त्रस्य धारणात् २९॥

दशमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे मनुष्यके सर्व ग्रह शांत रहते हैं और पिशाच वेताल, ब्रह्मराक्षस, सर्प इत्यादिका भय नहीं होता ॥ २९ ॥

एकादशास्यो रुद्रो हि रुद्राश्चैकादश स्मृताः ।
शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं शृणु ३० ॥

हे स्कंद ! एकादशमुखी रुद्राक्ष पुराणोंके विषै जो एकादश रुद्र वर्णन कियेहैं सो उनमेंसे साक्षात् रुद्रस्वरूप है जो मनुष्य अपनी शिखामें धारण करते हैं उनके पुण्यके फलको मैं वर्णन करता हूँ तिसको तुम सुनो ॥ ३० ॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
ग्रहणे चैव सोमस्य सम्यग्दत्तस्य तत्फलम् ३१॥

हजार अश्वमेध यज्ञ करनेका फल सौ वाजपेय यज्ञ करनेका फल और चन्द्रग्रहणमें दान करनेसे जो फल प्राप्त होताहै।

तत्फलं लभते मर्त्यो रुद्रवक्त्रस्य धारणात् ॥

सो फल मनुष्यको एकादशमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे प्राप्त होता है।

द्वादशास्यो हि रुद्राक्षो साक्षाद्देवः प्रभाकरः ३२॥

द्वादशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् सूर्यका स्वरूप है ॥ ३२ ॥

रुद्राक्षं द्वादशास्यन्तु धारयेत्कण्ठदेशतः।
गवां वधं नरवधं महारत्नं हरन्ति ये ॥ ३३ ॥

द्वादशमुखी रुद्राक्षको जो मनुष्य अपने कंठमें (रुद्राक्षान्कंठदेशे दशनपरमितान्–दांतोंकी संख्याके बराबर अ-

र्थात् ३२) धारण करते हैं उन मनुष्योंने गोवध किये हैं मनुष्य हत्याकी हैं स्वच्छ अमूल्य रत्न चुराए हैं ॥ ३३ ॥

नश्यन्ति तानि पापानि वक्त्रद्वादशधारणात् ।
आदित्याश्चैव ते सर्वे द्वादशैव व्यवस्थिताः ३४॥

द्वादशमुखी रुद्राक्षके धारण करनेसे उन मनुष्योंके पाप नाशको प्राप्त होजाते हैं क्योंकि सूर्यसे आदि लेकर संपूर्ण आदित्य द्वादशमुखी रुद्राक्षमें वास करतेहैं ॥ ३४ ॥

न चौराग्निभयं तस्य न च व्याधिः प्रजायते ।
अर्थवान्सुभगश्चैव दरिद्रश्चापि यो नरः ॥ ३५ ॥

इसलिए उन मनुष्योंको चोर, अग्निका भय तथा अनेक प्रकारकी व्याधी नहीं होती और वे अर्थवान् होते हैं यदि दरिद्रीभी हों तबभी भाग्यवान् होजाते हैं ॥ ३५ ॥

हस्त्यश्वमृगमार्जारा महिषः शूकरस्तथा ।
श्वानदंष्ट्री शृगालाश्च न बाधन्ते कदाचन ॥३६॥

हाथी, घोडा, हरिण, बिलाव, भैंसा, शूकर, तिसी प्रकार श्वान अर्थात् कुत्ता शृगाल अर्थात् स्यार ये उन मनुष्योंको कभी बाधा नहीं करते हैं ॥ ३६ ॥

त्रयोदशास्यो रुद्राक्षो साक्षाद्देवः पुरन्दरः ।

त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् इन्द्रका स्वरूप है ॥

त्रयोदशास्यो रुद्राक्षो वत्स यो धारयेन्नरः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति सौभाग्यमतुलं भवेत् ३७

हे वत्स ! जो मनुष्य त्रयोदशमुखी रुद्राक्षको धारण कर-तेहैं उनको सम्पूर्ण कामना प्राप्त होती है और अतुल अर्थात् तुलायमान नहीं ऐसे भाग्यवान् होतेहैं ॥ ३७ ॥

सर्वं रसायनं चैव धातुवादस्तथैव च ।
सर्वं सिध्यति रुद्राक्षान्धारयन्ति च ये नराः ३८॥

और सम्पूर्ण धातुओंकी रसायनादिक सिद्धीके लिये प्राप्त होती हैं जो मनुष्य त्रयोदशमुखीको धारण करतेहैं ॥ ३८ ॥

मुच्यंते पातकैः सर्वैस्तथा चैवोपपातकैः ॥३९॥

और वे संपूर्ण पापोंसे छूटजाते हैं और उपपातकोंसे भी ॥

चतुर्दशास्यो रुद्राक्षो साक्षाद्देवो हनूमतः ।
धारयेन्मूर्द्धि यो नित्यं स याति परमं पदम् ४०॥

चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् हनुमान्‌का स्वरूप है जो मनुष्य नित्यप्रति अपने मस्तकपर धारण करतेहैं वो परमपदके लिये प्राप्त होतेहैं ॥ ४० ॥

॥ स्कन्द उवाच ॥

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि वक्राणां मन्त्रमुत्तमम् ।
के गुणाः स्युरमंत्रेण समंत्रेणैव के गुणाः ॥४१॥

स्कंद बोले हे भगवन् ! मैं सुननेकी इच्छा करताहूं रुद्राक्ष धारण करनेके उत्तम मंत्रोंके गुणोंको कि जो मनुष्य मन्त्र सहित रुद्राक्षको धारण करते हैं और जो मन्त्ररहित अर्थात् वैसेही पहिर लेते हैं सो उनके गुणोंको मेरे आगे आप कहो ॥

॥ शिव उवाच ॥

रुद्राक्षस्य च माहात्म्यं वक्तुं नैवात्र शक्यते ।
अहं ते कथयिष्यामि शृणुष्व सुरसत्तम ॥४२॥

शिवजी बोले—कि हे सुरसत्तम ! रुद्राक्षके महात्म्यको कहनेको किसीको सामर्थ्य नहीं है मैं तेरे आगे वर्णन करता हूं तिसको तुम सुनो ॥ ४२ ॥

यः पुमान्मंत्रसंयुक्तं धारयेद्भुवि मानवः ।
रुद्रलोके वसेत्सत्यं सत्यमेतन्न संशयः ॥ ४३ ॥

जो मनुष्य पृथ्वीके विषै रुद्राक्षको मन्त्रसहित धारण करते हैं वह रुद्रलोकमें जाकर वास करते हैं इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ ४३ ॥

विना मंत्रेण यो धत्ते रुद्राक्षं भुवि मानवः ।
स याति नरके घोरे यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥४४॥

और जो मनुष्य पृथ्वीके विषै मन्त्ररहित रुद्राक्षको धारण करते हैं वह घोर नरकमें जाकर वास करतें हैं जब तक चतुर्दश इंद्र पृथ्वी के ऊपर वर्त्तमान हैं ॥ ४४ ॥

मंत्रानेतांस्तु वक्ष्यामि शृणु वत्स यथाक्रमम्॥४५

हे वत्स! जिस २ मन्त्र द्वारा मनुष्यको रुद्राक्ष धारण करना चाहिये वे मन्त्र मैं तेरे आगे कहताहूं तिसको तुम सुनो ४५॥

एकमुखीसे आदि लेकर चतुर्दशमुखीपर्यंत रुद्राक्ष धारण करनेकी विधि ।

अथ एकमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ एं हं औं एं ॐ । इति मंत्रः ।

अस्य श्री शिवमन्त्रस्य प्रासादऋषिः पंक्तिः छन्दः शिवो देवता हंकारो बीजम् औं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थं रुद्राक्षधारणार्थं जपे विनियोगः । वामदेवऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमो मुखे, ॐ एँ ऐं नमः हृदि, हँ बीजाय नमो गुह्ये, औं शक्तये नमः पादयोः, ॐ ॐ हां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ एँ हीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ हँ हूँ मध्यमाभ्यां वषट, ॐ आ हैं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ऐं हौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् इति करन्यासः ॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हां हृदयाय नमः । ॐ एँ हों शिरसे स्वाहा, । ॐ हँ हूँ शिखायै वष ् । ॐ औं हैं कवचाय हुँ। ॐ ऐं हौं नेत्रत्रयाय वौषट । ॐ ॐ हः अस्त्राय फट् ॥ (अथ ध्यानम्) मुक्तापीनपयोदमौक्तिकजपावर्णैर्मुखैः पञ्चभिस्त्र्यक्षैराजितमीशमिन्दुमुकुटं पूर्णेन्दुकोटिप्रभम् ॥ शूलं टंककृपाणवज्रदहने नागेन्द्रघंटांशुकं पाणिभ्भीतिवरान्दधानमपरं तेजोज्ज्वलं चिन्तये ॥१॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य कुर्याज्जपसहस्रकं तदनन्तरम्भाभिमुख्यसामीप्यं घटोपरि ताम्रपात्रं निधाय तत्र रुद्राक्षं क्षिप्त्वा पंक्तिप्राणायामं कृत्वा । पश्चात् वामे जलपात्रं धृत्वा

तत्र जले सव्यहस्तं धृत्वा दक्षिणपाणिना सहस्रजपं कुर्यात्। पुनस्तस्योपरि जलं क्षिपेत् रुद्राक्षं धारयेत्। एवं सर्वत्र विधिर्ज्ञेयः॥

अथ द्विमुखीरुद्राक्षधारणविधिः।

ॐ क्ष्रीं ह्रीं क्ष्रौं व्रीं ॐ। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीदेवदेवेशमन्त्रस्य अत्रिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः देवदेवेशो देवता क्ष्रीं बीजं क्ष्रौं शक्तिः मम चतुर्वर्गसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। अत्रिऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमोमुखे देवदेवेशाय नमो हृदि। क्ष्रीं वीजाय नमो गुह्ये। क्ष्रौं शक्तये नमः पादयोः।(करन्यासः) ॐ ॐ अँगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्ष्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ क्ष्रौं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ व्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ क्ष्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ क्ष्रौं कवचाय हुँ। ॐ व्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उँ अस्त्राय फट्॥ (अथ ध्यानम्) तपनसोमहुताशनलोचनं घनसमानगलं शशिसुप्रभम्। अभयचक्रपिनाकवरान्करैः दधतमिन्दुधरं गिरिशंभजेत्।

अथ त्रिमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ रँ इँ ह्रीं ह्नूं ओं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्री अग्निमन्त्रस्य वसिष्ठज ऋषिः । गायत्री छन्दः । अग्निर्देवता ह्रीं बीजं हूँ शक्तिः चतुर्वर्गसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । वसिष्ठजऋषये नमः शिरसि, । गायत्रीछन्दसे नमो मुखे । अग्निदेवतायै नमो हृदि । ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये । हूँ शक्तये नमः पादयोः ॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ रं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ इँ मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां हुँ । ॐ हूँ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ रँ शिरसे स्वाहा । ॐ इँ शिखायै वषट् । ॐ ह्रीं कवचाय हुँ, । ॐ हूं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ॐ अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्)अष्टशक्ति स्वस्तिकामातिमुच्चैर्दीर्घैरेभिर्धारयंतं जपाभम् । हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं वद्धमौलिं जटाभिः ॥ ३ ॥इति त्रिमुखी० ।

अथ चतुर्मुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ वां क्रां तां हां ईं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीब्रह्ममन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता वां बीजं क्रां शक्तिः अभीष्टसिध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे

जपे विनियोगः। भार्गवऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। ब्रह्मादेवतायै नमो हृदि। वां वीजाय नमो गुह्ये। क्रां शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ तां अनामिकाभ्यां हुं। ॐ हां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ईं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ वां शिरसे स्वाहा। ॐ क्रां शिखायै वषट्। ॐ तां कवचाय हुँ। ॐ हां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ईं अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) प्रणम्य शिरसा शम्भुदृष्टवक्त्रं चतुर्मुखम्। गायत्रीसहितं देवं नमामि विधिमीश्वरम्॥४॥ इति चतुर्मुखी०।

अथ पञ्चमुखीरुद्राक्षधारणविधिः।

ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य श्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः सदाशिवकालाग्निरुद्रो देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीछन्दसे नमो मुखे। श्रीसदाशिवकालाग्निरुद्रदेवतायै नमो हृदि। ॐ वीजाय नमो गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः

पादयोः ॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ हां तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ आं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ क्ष्म्यौं अनामिकाभ्यां हुँ । ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ हां आं क्ष्म्यौं स्वाहा, करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ हां शिरसे स्वाहा । ॐ आं शिखायै वषट् । ॐ क्ष्म्यौं कवचाय हुँ । ॐ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ हां आं क्ष्म्यौं स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ (अथ ध्यानम्) हावभावविलसार्द्धनारिकं भीषणार्द्धमथवा महेश्वरम् । पाशसोत्पलकपालशूलिनं चिन्तये जपविधौ विभूतये ॥ ९ ॥ इति पञ्चमुखी० ।

अथ षण्मुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्तिऋषिः पंक्तिः छन्दः कार्त्तिकेयदेवता ऐं बीजं सौं शक्तिः क्लीं कीलकं अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । दक्षिणामूर्त्तिऋषये नमः शिरसि । पंक्तिछन्दसे नमो मुखे । कार्त्तिकेयदेवतायै नमो हृदि । ऐं बीजाय नमो गुह्ये । सौं शक्तये नमः पादयोः । (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां

वषट् । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुँ, । ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रीं शिखायै वषट् । ॐ क्लीं कवचाय हुँ । ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) क्रौंचपर्वत-विदारणलोलो दानवेन्द्रवनिताकृतलण्डः । चूतपल्लवशिरोमणि चोदि भोः षडानन जगत्परिपाहि ॥ ६ ॥ इति षण्मुखी० ।

अथ सप्तमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ हूं क्रीं ग्लौं ह्रीं स्रौं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीअनन्तमन्त्रस्य भगवान् ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्तिःअभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधा-रणार्थे जपे विनियोगः । भगवान् ऋषये नमः शिरसि गायत्रीछन्दसे नमो मुखे । अनन्तदेवतायै नमो हृदि । क्रीं बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः-पादयोः । (अथ कर-न्यासः) ॐ ॐ अँगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हूं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ग्लौं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ स्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ हूं शिरसे

स्वाहा । ॐ क्रीं शिखायै वषट् । ॐ ग्लौं कवचाय हुँ । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ स्रौं अस्त्रायफट् । (अथ ध्यानम्) अनन्तं पुंडरीकाक्षं फणाशतविभूषितम् । विपक्वबन्धूक आकारं कूर्मारूढं प्रपूजयेत् ।

अथ अष्टमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ हां ग्रीं लं आं श्रीं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीगणेशमन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विनायको देवता ग्रीं बीजं आं शक्तिः चतुर्वर्गसिद्धयर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । भार्गवऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । विनायकदेवतायै नमो हृदि । ग्रीं बीजाय नमो गुह्ये । आं शक्तये नमः पादयोः । (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ हां तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ग्रीं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ लँ अनामिकाभ्यां हुँ । ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः,ॐ हां शिरसे स्वाहा, ॐ ग्रीं शिखायै वषट्, ॐ लँ कवचाय हुँ, ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ श्रीं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) हरतु कुलगणेशो विघ्नसङ्घानशेषान् नयतु सकलसम्पत्पूर्णतां साधका-

नाम् । पिबतु बटुकनाथः शोणितं निन्दकानां दिशतु सकल-
कामान् कौलिकानां गणेशः ॥

अथ नवमुखीरुद्राक्षधारणाविधिः ।

ॐ ह्रीं वँ यँ रँ लँ । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीभैरवमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्रीछन्दः भैरवो देवता वँ बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः । नारदऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमो मुखे, भैरवदेवतायै नमो हृदि, वँ बीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ वँ मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ यँ अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ रं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ लँ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः,ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ वँ शिखायै वषट्, ॐ यँ कवचाय हुँ, ॐ रँ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ लँ अस्त्राय फट् ॥ (अथ ध्यानम्) कपालहस्तं भुजगोपवीतं कृष्णच्छविं दण्डधरं त्रिनेत्रम् । अचिन्त्यमाद्यं मधुपानमत्तं हृदि स्मरेद्भैरवमिष्टदं नृणाम् ॥ १ ॥

अथ दशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ओम् । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीजनार्दनमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप्छन्दः जनार्दनो देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः। नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, जनार्दनदेवतायै नमो हृदि, श्रींबीजाय नमो गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां हुँ, ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथाङ्गन्यासः)ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रीं शिखायै वषट्, ॐ क्लीं कवचाय हुँ, ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ॐ अस्त्राय फट् ॥ (अथ ध्यानम्) विष्णुं शारदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथांगं गदामम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कांत्या जगन्मोहनम् । आबद्धांगदहारकुण्डलमहामौलिस्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैस्तुतम् ॥ १० ॥ इति दशमुखी० ।

अथ एकादशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ ह्रूं क्षूं मूं यूं औं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीरुद्रमन्त्रस्य कश्यपऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता रूं वीजं क्षूं शक्तिः अभीष्टसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनियोगः, कश्यपऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे रुद्रदेवतायै नमो हृदि, रूं वीजाय नमो गुह्ये, क्षूं शक्तये नमःपादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रूं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ क्षूं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ मूं अनामिकाभ्यां हुं; ॐ यूं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ औं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः. ॐ रूँ शिरसे स्वाहा, ॐ क्षूँ शिखायै वषट्, ॐ मूँ कवचाय हुं, ॐ यूँ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ औं अस्त्राय फट्। (अथ ध्यानम्) बालार्कायुततेजसं धृतजटाजूटेन्दुखण्डोज्ज्वलं नागेन्द्रैः कृतशेखरं जपवटीं शूलं कपालं करैः॥ खट्वांगं दधतं त्रिनेत्रविलसत्पञ्चाननं सुन्दरं व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयं श्रीनीलकण्ठं भजेत्॥ ११ ॥ इति एकादशमुखी० ।

अथ द्वादशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीसूर्यमन्त्रस्य भार्गवऋषिः गायत्रीछन्दः विश्वेश्वरो देवता ह्रीं वीजं श्रीं शक्तिः घृणिः कीलकं रुद्राक्षधार-

णार्थे जपे विनियोगः । भार्गवऋषये नमः शिरसि, गा । इन्द्रो छन्दसे नमो सुखे विश्वेश्वरी देवतायै नमो हृदि, ह्रीं बीजा-य नमो गुह्ये, श्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ क्षौं श्रीं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ घृं श्रीं अनामिकाभ्यां हुं । ॐ णिः श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् (अथांगन्यासः) ॐ ॐ श्रीं हृद-याय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा, । ॐ क्षौं श्रीं शिखायै वषट् । ॐ घृ श्रीं कवचाय हुँ, । ॐ णिः श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, । ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं अस्त्राय फट् । (अथ ध्या-नम्) शोणांभोरुहसंस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं दानांभोज-युगाभयानि दधतं हस्ते प्रवालप्रभम् ॥ केयूरांगदकंकणद्वयधरं कर्णोल्लसत्कुण्डलम् । लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं सूर्यं गुणां-घ्रिं भजेत् ॥ १२ ॥ इति द्वादशमुखी० ।

अथ त्रयोदशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ ईं यां आप ओं । इति मन्त्रः ।

अस्य श्रीइन्द्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्तिः छन्दः इन्द्रो देवता ईं वीजम् आप इति शक्तिः रुद्राक्षधारणार्थे जपे विनि-योगः । ब्रह्माऋषये नमः शिरसि । पंक्तिः छन्दसे नमो

देवतायै [illegible]नमो हृदि, । ईं वीजाय नमो गुह्ये । आप इति शक्तये नमः पादयोः । (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ यां मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ आप अनामिकाभ्यां हुँ । ॐ ॐ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ईं यां आप ओं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः, ॐ ईं शिरसे स्वाहा, ॐ यां शिखायै वषट् । ॐ आप कवचाय हुं। ॐ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ईं यां आप ॐ अस्त्रायफट् । (अथ ध्यानम्) पीतवर्णं सहस्राक्षं वज्रपद्मधरं विभुम् । सर्वालंकारसंयुक्तं नौमीन्द्रादिकमीश्वरम् ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशमुखीरुद्राक्षधारणविधिः ।

ॐ औं ह स्फ्रें खफ्रें हस्रौं हसफ्रेंइति मन्त्रः ।

अस्य श्रीहनुमान्मन्त्रस्य रामचन्द्रऋषिः जगती छन्दः श्री-हनुमद्देवता औं बीजं हस्फ्रें शक्तिःअभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः, रामचन्द्रऋषये नमः शिरसि । जगतीछन्दसे नमो मुखे । हनुमद्देवतायै नमो हृदि । औं वीजाय नमो गुह्ये । हस्फ्रें शक्तये नमः पादयोः॥ (अथ करन्यासः) ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ औं तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ हस्फ्रें मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ खफ्रें अनामिकाभ्यां हुँ । ॐ हँस्रौं कनिष्ठिकाभ्यां

वौषट्, ॐ ह्सक्ष्रैं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ (अथांगन्यासः) ॐ ॐ हृदयाय नमः । ॐ औं शिरसे स्वाहा । ॐ ... शिखायै वषट् । ॐ खक्ष्रैं कवचाय हुँ, ॐ ह्सक्ष्रैं अस्त्राय फट् । (अथ ध्यानम्) उद्यन्मार्त्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौञ्जीयज्ञोपवीताभरणरुचिशिखाशोभितं कुण्डलाभ्याम् । भक्तानामिष्टदानप्रवणमनुदिनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्द्धिम् ॥

एतैर्मंत्रैः क्रमेणैकमुखादिधारणंनमः ॥ ४६ ॥

इन मन्त्रोंसे क्रम करके एकमुखीसे आदि लेकर चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण कर नमस्कार करै ॥

देवानाञ्च यथा विष्णुर्ग्रहाणां च यथा रविः ।
रुद्राक्षं यस्य कण्ठे वा देहे गेहे स्थितोपि वा॥४७॥

जैसे समस्त देवताओंमें विष्णु, नवग्रहोंमें सूर्य श्रेष्ठ हैं तिसी प्रकार उस मनुष्यको समझना चाहिये जो कण्ठमें वा देहमें अथवा जिनके घरके विषे रुद्राक्ष स्थित होवे ॥ ४७ ॥

कुलैकविंशमुत्तार्य रुद्रलोके महीयते ।
मृन्मयं वापि रुद्राक्षं कृत्वा चैवावधारयेत्॥४८॥